नईदुनिया



सर्राफा बाजार में और महंगा हुआ सोना, हाजिर चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान सोने की कीमत में जबरदस्त तेजी का रुख बना हुआ नजर आ रहा है। भाव में उछाल आने के कारण चेन्नई के अलावा देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में सोना 3,050 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 3,160 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। वहीं चेन्नई में सोने के भाव में 3,000 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 3,270 रुपये प्रति 10 ग्राम की उछाल दर्ज की गई है। दूसरी ओर, एमसीएक्स पर उछाल आने के बावजूद सर्राफा बाजार में हाजिर चांदी के भाव में लगातार तीसरे दिन कोई बदलाव नहीं हुआ है। शुरुआती कारोबार में भी ये चमकीली धातु सोमवार के भाव पर ही बिक रही है।

भाव में बदलाव आने के कारण देश के अलग-अलग सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,42,810 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,42,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,30,910 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,31,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। दूसरी ओर, चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं होने के कारण यह चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में भी 1,99,900 रुपये प्रति किलोग्राम के पुराने स्तर पर ही बिक रही है।

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,42,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,31,060 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,42,810 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,30,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,42,860 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,30,960 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,42,920 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,31,010 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,42,810 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,30,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,42,860 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,30,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,42,960 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,31,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,42,860 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,30,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। चंडीगढ़ में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,42,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,31,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,42,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,31,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोना मजबूती के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

न्यूज ब्रीफ

महिंद्रा और टाटा की 7-सीटर एसयूवी सेगमेंट में नए माडल लाने की तैयारी



नई दिल्ली। महिंद्रा और टाटा मोटर्स आने वाले समय में 7-सीटर एसयूवी सेगमेंट में कई नए माडल लाने की तैयारी कर रही हैं। महिंद्रा अपनी लोकप्रिय स्कार्पियो-एन का एक और फेसलिफ्ट 2027 में पेश कर सकती है। इसमें नया फ्रंट डिजाइन, गोल हेडलैंप, बड़ी ग्रिल, नए एलईडी हेडलैंप और संशोधित बंपर जैसे बाहरी बदलाव देखने को मिल सकते हैं, जो हाल ही में शोकेस की गई स्कार्पियो लाइफस्टाइलर पिकअप से प्रेरित हो सकते हैं। इसके डैशबोर्ड और फीचर्स में भी अपडेट की उम्मीद है। इंजन विकल्प मौजूदा 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल और 2.2-लीटर डीजल इंजन ही रहने की संभावना है, साथ ही मैन्युअल और आटोमैटिक गियरबाक्स व कुछ वेरिएंट में 4-व्हील ड्राइव का विकल्प भी मिलेगा। महिंद्रा एक्सयूवी 7एक्सओ का स्ट्रान्ग-हाइब्रिड वर्जन भी विकसित कर रही है, जिसे 2026 के अंत तक लान्च किया जा सकता है। इस हाइब्रिड एसयूवी में मौजूदा 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ एक इलेक्ट्रिक मोटर और छोटी बैटरी होगी, जिससे शहर में ड्राइविंग के दौरान बेहतर माइलेज मिलेगा और कुछ स्थितियों में यह केवल इलेक्ट्रिक पावर पर भी चल सकेगी। इसकी बैटरी क्षमता, कुल पावर और माइलेज से जुड़ी जानकारी अभी सामने नहीं आई है। टाटा मोटर्स अपनी लोकप्रिय 7-सीटर एसयूवी सफारी का इलेक्ट्रिक वर्जन, सफारी ईवी, जनवरी 2027 में लाने की तैयारी में है। यह कंपनी की पहली 7-सीटर इलेक्ट्रिक एसयूवी होगी, जो 6-सीटर और 7-सीटर दोनों कान्फिगरेशन में आ सकती है।

सालाना आधार पर होंडा कुल बिक्री में 23.16 प्रतिशत की गिरावट दर्ज



नई दिल्ली। बीते अक्टूबर महीने के दौरान होंडा कार्स इंडिया कंपनी की कुल बिक्री में सालाना आधार पर 23.16 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जहाँ कुल 8,082 गाड़ियाँ बिकीं, जबकि पिछले साल इसी महीने 10,518 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। कंपनी के लिए अक्टूबर 2026 में बिक्री के आंकड़े मिले-जुले रहे। घरेलू बाजार में कंपनी ने अच्छी बढ़ोतरी दर्ज की, जो मुख्य रूप से त्योहारों के दौरान बढ़ी मांग और नई लान्च हुई एलिवेट एसयूवी को मिले सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण हुई। अक्टूबर 2026 में होंडा ने घरेलू मार्केट में 7,609 गाड़ियाँ बेचीं, जो पिछले साल अक्टूबर के 6,394 यूनिट्स के मुकाबले 19 प्रतिशत अधिक है। सितंबर 2026 की तुलना में भी घरेलू बिक्री में सुधार देखा गया, जब कंपनी ने 4,465 गाड़ियाँ बेची थीं। कंपनी के अनुसार, नई एलिवेट को उसके आकर्षक डिज़ाइन, बेहतर फीचर्स और एसयूवी लुक के कारण ग्राहकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। होंडा कार्स इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट (मार्केटिंग और सेल्स) कुनाल बेहल ने त्योहारों की मांग और विभिन्न माडलों को मिल रहे समर्थन को अक्टूबर की बिक्री के लिए महत्वपूर्ण बताया। कुल बिक्री में गिरावट का मुख्य कारण निर्यात में भारी कमी रही।

एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया की लगातार दूसरी तिमाही में दोहरे अंकों की वृद्धि

नई दिल्ली। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया ने वित्त वर्ष 2027 की दूसरी तिमाही में 19.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 7,380 करोड़ रुपये का परिचालन राजस्व दर्ज किया है। कंपनी का कर पश्चात मुनाफा 25.7 प्रतिशत बढ़कर 489 करोड़ रुपये रहा, जबकि एबिटा में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कंपनी के प्रबंध निदेशक होंग जू जियोन ने बताया कि घरेलू मांग, प्रीमियम उत्पादों की बढ़ती लोकप्रियता और बाजार विस्तार से प्रदर्शन को मजबूती मिली है। होम अप्लायंसेज और एयर सॉल्यूशन कारोबार में 20.9 प्रतिशत, जबकि होम एंटरटेनमेंट में 17.2 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। कंपनी ने भारत में वाहन समाधान कारोबार के तहत इन-व्हीकल इंफोटेनमेंट क्षेत्र में प्रवेश की घोषणा भी की है। एलजी ने वित्त वर्ष 2027 में करीब 15 प्रतिशत राजस्व वृद्धि का लक्ष्य दोहराया है।

ग्लोबल मार्केट से पाजिटिव संकेत एशिया में मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली

ग्लोबल मार्केट से पाजिटिव संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान शानदार बढ़त के साथ बंद हुए थे। डाउ जोन्स फ्यूचर्स भी सुबह मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार उत्साह बना रहा, जहां प्रमुख सूचकांकों में जोरदार तेजी दर्ज की गई थी। दूसरी ओर, एशियाई बाजार में मिला-जुला कारोबार हो रहा है। हालांकि भारतीय बाजार के लिए शुरुआती संकेत काफी मजबूत नजर आ रहे हैं।



अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान वाल स्ट्रीट पर बेहतरीन रिकवरी देखने को मिली। अमेरिकी कांग्रेस में डेमोक्रेट्स की जीत के बाद राजनीतिक अनिश्चितता कम होने से निवेशकों में उत्साह बना हुआ नजर आया, जिससे सूचकांकों में मजबूती आई। हालांकि, एआई को लेकर कड़े नियमों की आशंका के चलते डेटा सेंटर कंपनियों के शेयरों में कुछ गिरावट भी दर्ज की गई। सत्र में डाउ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 1,569.40 अंक यानी तीन प्रतिशत की जोरदार तेजी के साथ 53,356.12 अंक के स्तर पर बंद हुआ। वहीं एसएंडपी 500 इंडेक्स 119.70 अंक यानी 1.58 प्रतिशत की बढ़त के साथ 7,688.62 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

इसके साथ ही टेक कंपनियों से जुड़े नैस्डैक कंपोजिट ने भी 364.50 अंक यानी 1.44 प्रतिशत की मजबूती के साथ 25,736.51 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। वहीं, डाउ जोन्स फ्यूचर्स फिलहाल 119.18 अंक यानी 0.22 प्रतिशत की बढ़त के साथ 53,475.30 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

अमेरिकी बाजार की तर्ज पर यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान खरीदार पूरी तरह हावी रहे। जर्मनी का डीएएक्स इंडेक्स 573.05 अंक यानी 2.17 प्रतिशत की बड़ी बढ़त दर्ज करते हुए 26,437.67 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह फ्रांस के सीएसी इंडेक्स ने 157.58 अंक यानी 1.93 प्रतिशत की शानदार तेजी के साथ 8,177.89 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। वहीं ब्रिटेन का एफटीएसई इंडेक्स भी 190.78 अंक यानी 1.76 प्रतिशत की मजबूती दिखाते हुए 10,829.21 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

ग्लोबल मार्केट के इन संकेतों के बीच एशियाई बाजार में सुबह मिला-जुला रुख बना हुआ नजर आ रहा है। एशिया के नौ प्रमुख बाजार में से पांच के सूचकांक बिकवाली के दबाव में लाल निशान में बने हुए हैं, जबकि चार सूचकांकों में फिलहाल बढ़त बनी हुई है। राहत की बात यह है कि भारतीय बाजार के लिए शुरुआती संकेत देने वाले गिफ्ट निफ्टी में सुबह तेज उछाल का रुख बना हुआ है, जो घरेलू बाजार के लिए बेहतरीन संकेत हैं। फिलहाल यह सूचकांक 418 अंक यानी 1.75 प्रतिशत की जोरदार मजबूती के साथ 24,368 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

इसके अलावा हान्गकान्ग के शेयर बाजार में भी जोरदार तेजी का रुख बना हुआ है। यहां हैंगसेंग इंडेक्स फिलहाल 736.50 अंक यानी 3.08 प्रतिशत की बड़ी बढ़त के साथ 24,656 अंक के स्तर पर आ गया है। इंडोनेशिया के बाजार में भी खरीदार एक्टिव नजर आ रहे हैं, जिसके चलते जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 111.81 अंक यानी 2.27 प्रतिशत की तेजी के साथ 5,031.58 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं चीन का शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 3.62 अंक यानी 0.10 प्रतिशत की मामूली उछाल के साथ 3,689.79 अंक के स्तर पर बना हुआ है। दूसरी ओर, जापान का निक्केई 225 इंडेक्स कमजोरी के साथ लाल निशान में पहुंचा हुआ है। फिलहाल यह सूचकांक 793.63 अंक यानी 1.28 प्रतिशत की गिरावट के साथ 61,395 अंक के स्तर पर बना हुआ है। दक्षिण कोरिया के कोस्पी इंडेक्स में भी मंदी का रुख बना हुआ नजर आ रहा है, जहां चौतरफा बिकवाली के दबाव से फिलहाल यह सूचकांक 250.99 अंक यानी 4.42 प्रतिशत की जोरदार गिरावट के साथ 5,432.81 अंक के स्तर पर आ गया है। इसी तरह ताइवान स्टाक एक्सचेंज में भी जबरदस्त कमजोरी का माहौल बना हुआ है, जहां मुनाफावसूली के कारण ताइवान वेटेड इंडेक्स 874.44 अंक यानी 2.04 प्रतिशत फिसल कर 42,074.47 अंक के स्तर पर आ गया है। थाईलैंड के सेट कंपोजिट इंडेक्स में भी सुस्ती नजर आ रही है। फिलहाल यह सूचकांक 9.35 अंक यानी 0.62 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,492.74 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसके अलावा सिंगापुर का स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स भी मामूली दबाव के बीच काम करता नजर आ रहा है। यह सूचकांक फिलहाल 1.35 अंक यानी 0.03 प्रतिशत की सांकेतिक सुस्ती के साथ 5,290.49 अंक के स्तर पर बना हुआ है।

अक्टूबर में गोल्ड ईटीएफ निवेश में 26 फीसदी की गिरावट



नई दिल्ली

विशेषज्ञों ने निवेशकों को दी संयम बरतने की सलाह दी

अक्टूबर महीने में गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) में निवेशकों की दिलचस्पी कम होती दिखी है। इस अवधि में गोल्ड ईटीएफ में लगभग 3,300 करोड़ रुपये का नया निवेश आया, जो सितंबर के 4,450 करोड़ रुपये के मुकाबले करीब 26 फीसदी कम है। सितंबर में यह आंकड़ा पिछले सात महीनों का उच्चतम स्तर था।

इस गिरावट के मुख्य कारण म्यूचुअल फंड कंपनियों द्वारा गोल्ड फंड आफ फंड्स (एफओएफ) में नया निवेश रोकना और सोने की कीमतों में आई नरमी रहे। इस गिरावट के पीछे सबसे बड़ा कारण अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में म्यूचुअल फंड कंपनियों द्वारा गोल्ड फंड आफ फंड्स (एफओएफ) में नया निवेश बंद करना रहा।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के निर्देश पर यह फैसला लिया गया था, जिसकी वजह देश में सोने का बढ़ता आयात और रुपये पर दबाव की चिंताएं थीं।

चूंकि गोल्ड एफओएफ, गोल्ड ईटीएफ में निवेश का एक प्रमुख जरिया है, इसलिए इसके बंद होने से ईटीएफ में नया पूंजी प्रवाह काफी हद तक रुक गया। सोने की कीमतों में आई नरमी भी निवेश में गिरावट की दूसरी बड़ी वजह है।

सितंबर और अक्टूबर के दौरान सोने के दाम में करीब 10 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, वहीं रुपये में सोने की कीमत अपने सर्वकालिक उच्च स्तर से लगभग 25 फीसदी नीचे आ चुकी है। विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिका में बढ़ती महंगाई की चिंताएं फेडरल रिजर्व को ब्याज दरें बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकती हैं, जिससे अमेरिकी बान्ड यील्ड बढ़ रही है और डालर मजबूत हो रहा है। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में, ब्याज न देने वाला सोना निवेशकों के लिए कम आकर्षक हो जाता है।

विशेषज्ञों के अनुसार निकट भविष्य में सोने की कीमतों पर दबाव बना रह सकता है और इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। उन्होंने निवेशकों को सलाह दी है कि वे एक साथ पूरी रकम लगाने के बजाय, कीमतों में गिरावट आने पर धीरे-धीरे निवेश करने पर विचार करें।

हालांकि, दीर्घकालिक पोर्टफोलियो में सोना अब भी महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह अनिश्चित समय में जोखिम कम करने और निवेश में विविधता लाने में सहायक होता है।

बजाज आटो ने वाहनों की बिक्री में दर्ज की मजबूत वृद्धि



नई दिल्ली। अक्टूबर 2026 में बजाज आटो ने दोपहिया और वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री में एक मजबूत वृद्धि दर्ज की है। स्वदेशी कंपनी बजाज आटो ने बीते महीने कुल 5.91 लाख से अधिक वाहन बेचे, जो पिछले साल इसी महीने की तुलना में 14 प्रतिशत की प्रभावशाली सालाना बढ़ोतरी को दर्शाता है। बजाज आटो ने अपनी यह नवीनतम बिक्री रिपोर्ट जारी करके बाजार में अपनी मजबूत पकड़ साबित कर दी है। अक्टूबर में, बजाज आटो के दोपहिया सेगमेंट ने कुल 5,01,194 यूनिट्स की बिक्री की, जिसमें 13 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। घरेलू बाजार में दोपहिया वाहनों की बिक्री 10 प्रतिशत बढ़कर 2,92,885 यूनिट्स रही, जबकि निर्यात के मोर्चे पर 18 प्रतिशत की शानदार बढ़ोतरी के साथ 2,08,309 यूनिट्स भेजी गईं, जो वैश्विक बाजारों में बजाज के जबरदस्त दबदबे को दर्शाता है। वाणिज्यिक वाहन सेगमेंट में भी कंपनी ने जबरदस्त उछाल देखा। अक्टूबर 2026 में, बजाज के कुल वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री 20 प्रतिशत बढ़कर 90,682 यूनिट्स तक पहुंच गई। घरेलू वाणिज्यिक वाहन बाजार में 22 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 58,263 यूनिट्स बिकीं, वहीं निर्यात में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 32,419 वाणिज्यिक यूनिट्स विदेशों में भेजी गईं।

सीमेंट उद्योग में दो दिग्गजों का बढ़ता वर्चस्व, छोटे खिलाड़ियों के लिए चुनौती

वित्तीय वर्ष 2026 तक अल्ट्राटेक और अंबुजा की संयुक्त बाजार हिस्सेदारी 51.2 फीसदी पहुंची



नई दिल्ली

भारतीय सीमेंट उद्योग अब एक बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहा है, जहां आदित्य बिड़ला समूह की अल्ट्राटेक सीमेंट और अदाणी समूह की अंबुजा सीमेंट का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। आक्रामक अधिग्रहण और उत्पादन क्षमता के विस्तार की बदौलत वित्त वर्ष 2026 तक इन दो दिग्गजों की संयुक्त बाजार हिस्सेदारी 51.2 फीसदी के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गई है, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा का परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है और छोटी कंपनियों के लिए चुनौती खड़ी हो गई है। भारत का सीमेंट बाजार अब कुछ चुनिंदा कंपनियों के हाथों में केंद्रित होता जा रहा है। वित्त वर्ष 2023 में 44.8 फीसदी की संयुक्त बाजार हिस्सेदारी रखने वाली अल्ट्राटेक और अंबुजा सीमेंट ने तीन वर्षों में इसे बढ़ाकर 51.2 फीसदी कर दिया है। यह वृद्धि बड़े पैमाने पर अधिग्रहण और उत्पादन क्षमता के निरंतर विस्तार के कारण हुई है, जिससे उद्योग की वृद्धि का एक बड़ा हिस्सा इनके पास आ गया है।

अल्ट्राटेक सीमेंट ने जुलाई 2024 में इंडिया सीमेंट्स और मार्च 2025 में केसोराम सीमेंट का अधिग्रहण किया। वहीं, अदाणी समूह के नियंत्रण में आने के बाद अंबुजा सीमेंट ने सांघी इंडस्ट्रीज, पेन्ना सीमेंट, ओरिएंट सीमेंट और जेपी सीमेंट जैसी कई कंपनियों को अपने पोर्टफोलियो में शामिल किया है। मई 2023 में अदाणी समूह द्वारा स्विट्जरलैंड की होल्सिम से अंबुजा और उसकी सहायक कंपनी एसीसी का अधिग्रहण इस एकीकरण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण मोड़ रहा। इस प्रवृत्ति ने सीमेंट उद्योग को दूरसंचार, विमानन और इस्पात जैसे क्षेत्रों की श्रेणी में ला दिया है, जहां शीर्ष दो कंपनियों की बाजार हिस्सेदारी 50 फीसदी से अधिक होती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह एकीकरण इन दिग्गजों की मूल्य निर्धारण क्षमता को बढ़ाएगा, बाजार में अनुशासन लाएगा और उनके मार्जिन तथा मुनाफे में सुधार करेगा, क्योंकि सीमेंट एक समान प्रकृति वाली कमोडिटी है। अल्ट्राटेक सीमेंट लंबे समय से उद्योग में एकीकरण की प्रमुख ताकत रही है और वित्त वर्ष 2026 तक उद्योग के कुल राजस्व में इसकी हिस्सेदारी 34.4 फीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है। वहीं, अदाणी समूह के अधिग्रहण के बाद अंबुजा सीमेंट ने भी 2024 से अपनी विस्तार और विलय-अधिग्रहण की रणनीति को तेज किया है। हालांकि, हाल की तिमाहियों में बढ़ती परिचालन लागत ने अंबुजा की कमाई पर कुछ दबाव डाला है।

डेट फंड में निवेश करने कई निवेशकों का रुझान बढ़ा

बान्ड, फेस वैल्यू, कूपन रेट समेत इन अहम शब्दों की जानकारी है जरूरी

नई दिल्ली

म्यूचुअल फंड में इक्विटी के साथ-साथ डेट फंड में निवेश करने की ओर कई निवेशकों का रुझान बढ़ा है। हालांकि, सरकारी बान्ड, कारपोरेट बान्ड और अन्य डेट सिक्योरिटीज में पैसा लगाने वाले इन फंडों में निवेश से पहले, निवेशकों के लिए बान्ड की बुनियादी बातों को समझना बेहद जरूरी है।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और एएमफी के अनुसार डेट फंड के कामकाज और उससे जुड़े जोखिमों को समझने के लिए बान्ड से जुड़े कुछ बुनियादी शब्दों की जानकारी निवेशकों को सशक्त बना सकती है। आइए, इन महत्वपूर्ण शब्दावली को आसान भाषा में समझते हैं। असल में, बान्ड एक प्रकार का कर्ज होता है। जब सरकार या किसी कंपनी को पूंजी की आवश्यकता होती है, तो वे निवेशकों से धन जुटाने के लिए बान्ड जारी करती हैं। बान्ड खरीदने का अर्थ है कि निवेशक उस सरकार या कंपनी को पैसा उधार दे रहे हैं। इसके एवज में निवेशकों को बान्ड की शर्तों के अनुसार नियमित ब्याज मिलता है और निर्धारित समय पर मूल निवेशित राशि वापस कर दी जाती है। डेट फंड का रिटर्न ब्याज दरों में बदलाव, बान्ड की कीमतों और जारी करने वाली संस्था की वित्तीय स्थिति से प्रभावित होता है, इसलिए इन शब्दों को समझना महत्वपूर्ण है।



बान्ड से जुड़े जरूरी शब्द

फेस वैल्यू (या पार वैल्यू): यह बान्ड की वह मूल कीमत है जो जारी करते समय तय होती है। इसी रकम को प्रिंसिपल अमाउंट कहते हैं, जिस पर ब्याज की गणना होती है और जो मैच्योरिटी पर वापस की जाती है। बाजार में बान्ड की कीमत इससे कम या ज्यादा हो सकती है।

इश्यूअर (जारीकर्ता): वह सरकार, कंपनी या संस्था जो पैसा जुटाने के लिए बान्ड जारी करती है, इश्यूअर कहलाती है। निवेशकों को ब्याज देने और मूल रकम लौटाने की प्राथमिक जिम्मेदारी इश्यूअर की ही होती है।

कूपन रेट: यह बान्ड पर मिलने वाले सालाना ब्याज की दर होती है, जिसे आमतौर पर फेस वैल्यू के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, 10,000 रुपए की फेस वैल्यू वाले बान्ड पर 8% कूपन रेट का मतलब है सालाना 800 रुपए का ब्याज।

कूपन पेमेंट: यह वह ब्याज की रकम होती है जो बान्ड जारी करने वाली संस्था निवेशक को देती है। यह भुगतान बान्ड की शर्तों के अनुसार मासिक, छह महीने या सालाना हो सकता है।

मैच्योरिटी: यह वह निश्चित तारीख होती है जब बान्ड की तय अवधि पूरी हो जाती है। इस तारीख पर इश्यूअर को बान्ड की शर्तों के मुताबिक निवेशक की मूल रकम वापस करनी होती है। इन शब्दों को समझकर निवेशक डेट म्यूचुअल फंड में अधिक सूचित और सुरक्षित तरीके से निवेश कर सकते हैं।